कुसुमवति साध्वी अभिनन्दन ग्रन्थ (फोल्डर नं. ०१२०३२)

मुख्य टाइटल
श्रद्धा स्निग्ध समर्पण
आशीर्वचन
सन्देशे
प्रकाशक के बोल
आदिवचन
दो शब्द
स्वकीय
क्या-कहाँ
प्रथम खण्ड ---------- १-१०२
श्रद्धार्चन ---------- १-६०
शुभकामना-अभिनन्दन---------- ६१-१०२
द्वितीय खण्ड – जीवन दर्शन ---------- १०३-१८०
विदुषीवर्य्या साध्वीरत्न महासती ---------- १०३
श्री कुसुमवती जी म. का जीवन दर्शन... ---------- १०९
परम विदुषी महासती श्री सोहनकुँवरजी म. ---------- ११७
जन्म से दीक्षा तक ----------१२१
संयम साधना ---------- १३५
व्यक्तित्व की विशेषताएँ ---------- १६३
अतीत की स्मृतियाँ ---------- १६७
स्थापित संस्थाओं का परिचय ---------- १७१
विशिष्ट व्यक्तित्वों से सम्पर्क ---------- १७३
महासती श्री कुसुमवती जी म.सा. का धर्म परिवार ---------- १७६
चातुर्मास सूची---------- १८०
तृतीय खण्ड – धर्म तथा दर्शन ---------- १८१-२७४
एक को जानो – डॉ. अमरनाथ पाण्डेय ----------१८१
जैन दर्शन सम्मत आत्मा का स्वरूप विवेचन – डॉ. एम. पी. पटैरिया---------- १८५
सामाजिक चरित्र के नैतिक उत्थान में – प्रो. चन्द्रशेखर राय ---------- १९४
जैन धर्म में व्यसनमुक्त जीवन का तुलनात्मक अध्ययन – प्रो. जनेश्वर मौआर---------- १९९
जैन पदार्थ-विवेचना में वैज्ञानिक दृष्टि – डॉ. नवलता ---------- २०१
कर्म सिद्धान्त-एक समीक्षात्मक अध्ययन – साध्वी श्रुतिदर्शनाश्रीजी ---------- २०९
विश्व धर्म के रूप में जैन धर्म दर्शन की प्रासंगिकता – डॉ. महावीरसरन जैन ---------- २१३
पुद्गल विवेचन-वैज्ञानिक एवं जैन आगम की दृष्टि में – डॉ. रमेशचन्द्र जैन ---------- २२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन दर्शन में द्रव्य की धारणा और विज्ञान – डॉ. वीरेन्द्रसिंह ---------------------------------- २२४
प्रमा की नयी परिभाषा – प्रो. संगमलाल पाण्डेय -- २२९
भारतीय योग परम्परा में जैन आचार्यों के योगदान का मूल्याँकन – डॉ. ब्रह्ममित्र अवस्थी ---- २३२
आगम साहित्य में ध्यान का स्वरूप – युवाचार्य डॉ. शिव मुनि ------------------------------ २४१
ध्यान-रूप-स्वरूप-एक चिन्तन – डॉ. साध्वी मुक्तिप्रभाश्रीजी---------------------------------- २४६
आत्मा के मौलिक गुणों की विकास प्रक्रिया के निर्णायक-गुणस्थान – श्री गणेश मुनि शास्त्री --- २४९
भारतीय दर्शन-चिन्तन की रूपरेखा – पं. देवकुमार जैन ------------------------------------- २६५

चतुर्थ खण्ड – जैन संस्कृति के विविध आयाम -- २७५-३५६

श्रमण संस्कृति – आचार्य राजकुमार जैन -- २७५
महाव्रतों का युगानुकूल परिवर्तन – मुनि श्री कन्हैयालालजी ---------------------------------- २८४
केवलज्ञान और केवलदर्शन, दोनों उपयोग युगपत् नहीं होते – कन्हैयालाल लोढ़ा ------------ २८७
भौतिक और अध्यात्म विज्ञान – श्री रमेश मुनि --- २९२
सर्वोदयी विचारों की अवधारणा के प्रेरक जैन सिद्धान्त – डॉ. शारदा स्वरूप ------------------ २९६
जागे युवा शक्ति – श्री देवेन्द्र मुनि --- २९९
भगवान् महावीर के सिद्धान्तों का दैनिक जीवन में उपयोग – डॉ. नरेन्द्र भानावत -------------३११
श्रमण संस्कृति का व्यापक दृष्टिकोण – साध्वी दिव्यप्रभाश्रीजी --------------------------------- ३१४
अदत्तादान-विरमण की वर्तमान प्रासंगिकता – ब्रजनारायण शर्मा ------------------------------ ३१७
प्राचीन भारतीय दण्डनीति – डॉ. तेजसिंह गौड़ --- ३२३
भगवान् महावीर और उनके द्वारा संस्थापित नैतिक मूल्य – डॉ. रामजीराय आरा------------- ३२८
अहिंसाया अन्तर्लिपिः – डॉ. केवलचन्द्र दाश -- ३३१
जैन शिक्षा बनाम आधुनिक शिक्षा - विजयकुमार --- ३३४
धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा – डॉ. हेमलता तलसेरा --- ३३८
चारित्रिक संकट से मुक्ति अहिंसा और सामाजिक परिवर्तन-आधुनिक सन्दर्भ – प्रो. कल्याणमल लोढ़ा -- ३४३
संस्कृत साहित्य और मुस्लिम शासक – श्री भंवरलाल नाहटा ------------------------------ ३५२

पंचम खण्ड – जैन साहित्य और इतिहास -- ३५७-४३६

भारतीय पुरातत्व की अवहेलना – डॉ. जगदीशचन्द्र जैन ----------------------------------- ३५७
आकार-चित्र रूप स्तोत्रों का संक्षिप्त निदर्शन – डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी ---------------------------- ३६१
भारतीय गणित के अंध युग में जैनाचार्यों की उपलब्धियाँ – डॉ. परमेश्वर झा ---------------- ३६९
जैन भूगोल का व्यावहारिक पक्ष – डॉ. पुष्पलता जैन ------------------------------------- ३७५
भगवती सूत्र में परामनोविज्ञान एवं पराशक्तियों के तत्व – श्री सौभाग्यमुनि ----------------- ३७८
जम्बूद्वीप और आधुनिक भौगोलिक मान्यताओं का तुलनात्मक विवेचन – डॉ. हरीन्द्रभूषण जैन --- ३८३
जैन-स्तोत्र-साहित्य – एक विहंगम दृष्टि – डॉ. गदाधरसिंह ---------------------------------- ३९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नीतिकाव्य के विकास में हिन्दी जैनमुक्तक काव्य की भूमिका – डॉ. गंगाराम गर्ग------------ ४०३
जैनाचार्य श्री हरिभद्र सूरि और श्री हेमचन्द्र सूरि – हजारीमल बाठिया ----------------------- ४१३
जैन परम्परा के व्रत उपवासों का आयु वैज्ञानिक वैशिष्ट्य – कन्हैयालाल गौड़ --------------- ४१६
आचार्य हरिभद्र के प्राकृत योग ग्रन्थों का मूल्यांकन – डॉ. छग्गनलाल शास्त्री --------------- ४२४
पुण्य और पाप – महासती श्री कुसुमवतीश्रीजी --- ४३६
षष्ठम खण्ड -- ४३७-४७४
भारतीय स्वातन्त्र्यान्दोलन की अहिंसात्मकता में महावीर के जीवन दर्शन की भूमिका –
प्रह्लाद नारायण वाजपेयी -- ४३७
पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में जैन नैतिक अवधारणा – प्रो. एल. के. ओड------------------- ४४१
विवाद-परिवाद के समाधान हेतु अनेकान्तवाद – डॉ. संजीव प्रचंडिया ----------------------- ४४८
जैन विचारधारा में शिक्षा – चांदमल कर्णावट -- ४४९
क्या हम बदल गये हैं – डॉ. आदित्य प्रचंडिया -- ४५६
सर्वोदयी विचारों की अवधारणा के प्रेरक जैन सिद्धान्त – लक्ष्मीचन्द जैन ------------------- ४५९
ध्यान-एक विमर्श – डॉ. दरबारिलाल कोटिया -- ४६५
सती प्रथा और जैन धर्म – प्रो. सागरमल जैन -- ४६८
सप्तम खण्ड – विचार मन्थन -- ४७५-५३६
प्रवचन
साधना का सारतत्व-समता --- ४७५
अन्तर्यात्रा-एक दृष्टि -- ४७८
वाणी-विवेक --- ४८२
संयम का सौन्दर्य -- ४८६
मन ही माटी, मन ही सोना--- ४८९
चिन्तन सूत्र
सुख और दुःख -- ४९३
जीवन का अभिशाप-दुर्व्यसन -- ४९४
ससद्गुणों का प्रचार हो --- ४९५
तर्क और श्रद्धा -- ४९६
लघु निबन्ध – नारी-नारायणी--- ४९७
निबन्ध
जैन दर्शन में अनेकान्त --- ४९८
सम्यग्दर्शन का स्वरूप --- ५०२
कहानी
वैर और वैरी --- ५०५
गिरे तो गिरे, पर उठे भी बहुत ऊंचे -- ५०८
विचार कण --- ५१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपदेशात्मक पद्य रचना -- ५२२
भजन -- ५२३
महासती श्री कुसुमवतीजी महाराज का साहित्य-एक समीक्षा – श्री राजेन्द्र मुनि ------------- ५२५
बालब्रह्मचारिण्याः श्रीमत्याः कुसुमवत्याः सत्याः यशःसौरभम् --------------------------------- ५३०
परिशिष्ट-- ५३७-५८४
जैनाचार-एक विवेचन – श्री राजेन्द्र मुनि -- ५३७
जैन दर्शन का हृदय है-स्याद्वाद – विदुषी साध्वी चारित्रप्रभाश्रीजी ---------------------------- ५४८
उपमिति भव प्रपंच कथा-कितना – साध्वी दिव्यप्रभाश्रीजी ---------------------------------- ५५४
सार्थक है सिद्धर्षि का रचना उपक्रम – साध्वी गरिमाश्रीजी ----------------------------------- ५६१
जैन संस्कृति और उसका अवदान जैनाचार का प्राण अहिंसा – साध्वी अनुपमाश्रीजी --------- ५६७
दीक्षा सप्तविंशति – रमेश मुनि शास्त्री -- ५७७
सम्माननीय सहयोगी --- ५७९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org